2

हाइकु

ज़िंदगी का सफ़र

सूखा या बाढ़
साहब के आँगन
सदा फुहार

–सुरंगमा यादव

'साहब के आँगन / सदा फुहार' –यहाँ किस हालत की ओर इशारा किया गया है?

पिता ने ढूँढ़ीं
लाठियाँ बुढ़ापे की
दीखती नहीं

–डॉ. गोपाल बाबू शर्मा

'लाठियाँ बुढ़ापे की / दीखती नहीं' –इन पंक्तियों से क्या आशय मिलता है?

ढूँढ़ती रही
बर्फ़ीली नगरी में
नेह की आँच

–कमला निखुर्पा

'बर्फ़ीली नगरी में / नेह की आँच' –से क्या तात्पर्य है?

गतिविधियाँ

» 'ज़िंदगी की चुनौतियाँ' विषय पर टिप्पणी लिखें।

अनुबद्ध कार्य

» हाइकु संकलित करें।

मदद लें :

सूखा	-	വരൾച്ച, drought, வறட்சி, ಬರಗಾಲ
बाढ़	-	प्रलय
फुहार	-	छोटी बूंदें
बुढ़ापे की लाठी	-	वृद्धावस्था का आश्रय
बर्फ़ीली	-	बरफ़ से भरी हुई
नेह की आँच	-	स्नेह की गर्मी

डॉ. सुरंगमा यादव

जन्म : 19 जून 1970

डॉ. सुरंगमा यादव का जन्म उत्तर प्रदेश में हुआ। 'यादों के पंछी', 'भाव प्रकोष्ठ', 'गाएगी सदी' आदि उनके प्रसिद्ध हाइकु संग्रह हैं। 'रामधारी सिंह दिनकर पुरस्कार' से वे सम्मानित हैं।

डॉ.गोपाल बाबू शर्मा

जन्म : 04 दिसंबर 1932

डॉ. गोपाल बाबू शर्मा का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ में हुआ। वे श्री वार्ष्णेय पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, अलीगढ़ के हिंदी विभाग में रीडर थे। 'सरहदों ने जब पुकारा', 'मोती कच्चे धागे में', 'काफ़िले रोशनी के', 'महके हरसिंगार' आदि उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं।

कमला निखुर्पा

जन्म : 05 दिसंबर 1967

कमला निखुर्पा का जन्म उत्तराखंड में हुआ। विभिन्न साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं तथा काव्य संग्रहों में हाइकु, संस्मरण, कविताएँ आदि प्रकाशित हैं। संप्रति केंद्रीय विद्यालय में प्राचार्या हैं।

» इस खूबसूरत और विशाल दुनिया में सबसे पहले आप कहाँ जाना चाहेंगे ? क्यों ?